ISSN No-2031-5063 Vol.1,Issue.VII/Jan 2012pp.1-4

Research Paper

' मुर्दहिया' में चित्रित दलित विमर्श

डॉ. साताप्पा शामराव सावंत.

प्रस्तावना :–

'' मुर्दहिया '' डॉ. तुलसीराम द्वारा लिखित दलित आत्मकथा है, जिसका प्रकाशन 'राजकमल प्रकाशन' की ओर से सन् 2010 ई. में हुआ है। डॉ. तुलसीराम, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के रूप में कार्यरत रहे। 'मुर्दहिया' तुलसीराम के गांव का नाम है। प्रस्तुत आत्मकथा की भूमिका में डॉ. तुलसीराम ने लिखा है – ''मुर्दहिया हमारे गांव धरमपुर (आजमगढ) की बहुउद्देश्यीय कर्म स्थली है। चरवाही से लेकर हरवाही तक के सारे रास्ते वही से गुजरते थे।इतना ही नहीं स्कूल हो या दुकान, बाजार हो या मंदिर, यहाँ तक कि, मजदूरी के लिए कलकत्ता वाली रेलगाडी पकडना हो तो भी मुर्दहिया से गुजरना पडता था।

हमारे गाँव की 'जिओ पॉलिटिक्स' यानी 'भू– राजनीति' दलितों के लिए मुर्दहिया एक सामरिक केंद्र जैसी थी । जीवन से लेकर मरन तक की सारी गतिविधियाँ मुर्दहिया समेट लेटी थी। सबसे रोचक तथ्य यह है कि, मुर्दहिया मानव और पशु में केाई फर्क नहीं करती थी। वह दोनों की मुक्तिदाता थी। विशेष रूप से मरे हुए पशुओं के पिंड पर जूझते सैंकडों गिद्धों के साथ कुत्ते और सियार मुर्दहिया को एक कला स्थली के रूप में बदल देते थे।रात के समय इन्ही सियारों की हुआं – हुआं वाली आवाज उसकी निर्जनता को भंग कर देती थी। हमारी दलित बस्ती के अनगनित दलित हजारों दुख – दर्द अपने अंदर लिए मुर्दहिया के दफन हो गए थे। यदि उनमें से किसी की भी आत्मकथा लिखी जाती तो उसका शीर्षक 'मुर्दहिया' हो होता'' ('मुर्दहिया' – भूमिका –पृ.5) तुलसीराम के मित्र 'तद्भव' के संपादक अखिलेश के आग्रह पर उन्होंने 'मुर्दहिया' आत्मकथा का लेखन किया है।

प्रस्तुत आत्मकथा को तुलसीराम ने सात उपशीर्षकों में विभाजित किया है। तुलसीराम का जन्म आजमगढ के पास मुर्दहिया में चमार जाति में हुआ। तुलसीराम का दोहरा शोषण हुआ है, एक वे दलित है, इसी कारण समाज में हीनता बोध के शिकार हुए, उन्हें जातीय दंश को झेलना पडा, दर – दर की ठोकरें खानी पडी। दूसरी ओर बचपन में एक आँख से विकलांग होने कारण परिवारजन,मित्र,–समाज में विकलांग हीनता का शिकार होना पडा।

प्रस्तुत आत्मकथा के प्रथम अध्याय का उपशीर्षक, 'भूतही पारिवारिक पृष्ठभूमि' है।प्रस्तुत अध्याय में लेखक ने दलित समाज अनपढ होने के कारण कैसे अंधविश्वास का प्रभाव में बढता है। इस पक्ष का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। तुलसीराम के दादा की हत्या रात के समय खेत की रखवाली करते समय हो गई थी। लेकिन गाँव में अंधविश्वास के चलते यह खबर फैल गई कि, भूत ने तुलसीराम के दादा को मार डाला है। तुलसीराम का जन्म दि. 1 जुलाई सन् 1949 ई.को. हुआ। उनके घर का परिवेश धार्मिक था।

तुलसीराम जब तीन वर्ष के थे तब चेचक की महामारी आई। उन पर चिकित्सकीय इलाज नहीं किया गया।उलटे गाँव की देवी –देवताओं के पास जाकर मन्नत माँगने का काम किया। तुलसीराम मरते – मरते बच गए। इस बीमारी में उनकी एक आँख चली गई। इसी कारण उनका नाम कनवा (कान्हा) पड गया। तुलसीराम अपनी दादी के व्यक्तित्त्व से काफी प्रभावित रहे। वह चमरिया देवी की भक्त रही। वह अंधविश्वासी थी। तुलसीराम के दादा – परदादा गाँव के ब्राह्मण जमीदारों के खेतों पर बंधुवा मजदूर का काम करते थे। तुलसीराम की दादी द्वारा मृत जानवरों की खाल निकालने का वर्णन काफी विस्तार से आया है। दलितों द्वारा मृत जानवरों का सुखाया गया माँस अर्थात् डांगर खाना बंद करने के अभियान का जिक्र हुआ है। अवैध यौन संबंध और डांगर खाने संबंधी मामलों पर जाति पंचायत द्वारा विचित्र फैसले सुनाने के कई उदाहरण तुलसीराम ने दिए है। जाति से प्रताडित कर देने पर सुअर – भात भोज का आयोजन किया जाता था। तुलसीराम के घर के सदस्य अनपढ होने के कारण वे अंधविश्वासी है। वे भूत पिशाच पर विश्वास रखते थे। उनके देवी –देवताओं का सुअर के बच्चों की बलि चढाई जाती थी। लेखक ने अपने परिवार के बारे में लिखा है – '' हमारा परिवार संयुक्त रूप से बृहद् होने के साथ साथ वास्तव में एक अजायबघर ही था । जिसमें भूत – प्रेत देवी देवता, संपन्नता –विपन्नता, शकुन – अपशकुन, मान– अपमान, न्याय – अन्याय, सत्य – असत्य ईर्ष्या – द्वेष, सुख – दुख आदि – आदि सब कुछ था किंतु शिक्षा कभी नहीं थी।'' ('मुर्दहिया' ' पृ. 21)

प्रस्तुत आत्मकथा का दूसरा उपशीर्षक 'मुर्दहिया तथा स्कूल जीवन ' है। प्रस्तुत उपशीर्षक में लेखक ने अपने स्कूल जीवन की चर्चा की है।लेखक के पिता ने गाँव के ब्राह्मण से ज्योतिष देखकर अपने बेटे को स्कूल में दाखिला कराया था। लेखक को करीब सात किलोमीटर की दूरी और तीन नालों को पार करके पैदल स्कूल जाना पडता था। स्कूल जाने पर लेखक को स्कूल के बच्चे जाति का आधार लेकर हैरान, अपमानित करते थे। स्कूल के बच्चे उन्हे ' चमरकिट' कहकर अवमानित करते थे।लेखक के बाल मन पर यह गंभीर चोट थी। लेखक ने एक प्रसंग का जिक्र करते हुए बताया है कि तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था कितनी भ्रष्ट थी। उनके स्कूल में हर छात्र की ओर से पास कराने के लिए दो रूपये घूस ली जाती थी। लेखक दो रूपयों की घूस देने में असमर्थ होने के कारण उन्हे फेल कर दिया गया था। उन्हे गणित विषय मे विशेष रूचि थी।

लेखक अपनी दादी के प्रति काफी भावूक संवेदनशील नजर आते हैं। उन्होंने अपनी दादी की गोद में बैठकर राजा–रानी, कौआ–गौरया की कहानियाँ सुनी थी। बारिश के दिनों दलित बस्ती में रोटी की कीमत क्या होती कोई यह बात लेखक से पूछ सकता है। लेखक दलित बस्ती में एकमात्र पढा–लिखा छात्र था। जिसके कारण उनकी बस्ती में दूर–दराज से आए पत्र पढने का काम वे करते थे। सन् 1975 ई. में गदर की सौंवी वर्षगाठ मनायी गई।तब ऐसा अंधविश्वास फैल गया था कि, महामारी होने वाली है। लेखक के गांव के लोग उल्कापात को भूतों का भ्रमण मानते हैं। गांव के आसपास पीपल के पेड पर भूत रहते हैं। इन अंधविश्वासों के चलते बालक तुलसीराम को मुर्दहिया की भूमि डरावनी लगती है। वे बचपन

में अपनी बस्ती के बच्चों के साथ भैंस बकरी चराने का काम किया करते थे। वहां वे काफी मनोरंजक खेल खेला करते थे। एक बार सियार द्वारा उनकी बकरी मार दी गई तब उन्हे अपने घर वालों से मार खानी पडी थी। लेखक बचपन में काफी अंधविश्वासी थे। उनके जीवन में कोई साधारणसा प्रसंग घटना घटित हो जाती थी तब वे चमरिया माई की प्रार्थना करते थे। उससे वे मन्नत मांगते थे। लेखक का गॉव अंधविश्वासों को जन्म देनेवाला झरा है। गाँव में उल्लू, कौओं के बारे में भ्राँत धारणाएं नजर आती है। लेखक ने दलित समाज में प्रचलित रीति–रिवाज और मान्यताओ का संबंध सीधे बौद्ध धम्म के साथ जोड दिया है।

' अकाल में अंधविश्वास ' प्रस्तुत आत्मकथा का तीसरा उपशीर्षक है। प्रस्तुत अध्याय में लेखक ने अंधविश्वास संबंधी धारणाओं पर प्रकाश डाला है। लेखक ने बौद्ध धम्म, दर्शन संबंधी छोटी – छोटी बातों को स्पष्ट किया है। इसका अच्छा उदाहरण है। लेखक की पाठशाला जो पेडों के नीचे भरती थी। इसी संदर्भ में वे लिखते हैं "वर्षों बाद यह समझकर बडी संतुष्टि की अनुभूति हुई कि पूरा का पूरा भारतीय दर्शन ही पेडों के नीचे सोचा गया था, जिनमें सर्वोपरि थे गौतम बुद्ध जिन्होंने 'निर्वाण' यानी हमेशा के लिए दुखों से छूटकार की विधि एक पेड के नीचे ही ढूँढ निकाला था।" ('मुर्दहिया'' पृ 54) लेखक ने स्कूल में श्रमदान के नामपर छात्रों के होने वाले शोषण पर प्रकाश डाला है। एक उनके स्कूल के एक शिक्षक अपने छात्रों को अपने खेत पर काम पर ले जाते थे। लेखक स्कूल में सबसे अधिक होशियार होने के कारण उन्हे भर्त्सना का शिकार होना पडा था।

लेखक के गाँव में दलितों और ब्राह्मणों में अनोखी लडाई होती थी। ब्राह्मर्णो के पास बल्लम, भाले तो दलितों के पास मृत जानवरों की तलवार नुमा पसलिया हथियार के रूप में हुआ करती थी। इस लडाई में जीत दलितों की होती थी। क्योंकि ब्राह्मण मृत गाय, बैल की पसलियों को स्पर्श करना पाय समझते थे। अकाल के दिनों दलितों के पडने वाले उपवास पर लेखक ने प्रकाश डाला है अकाल के दिनों भोजन के लिए कुछ न मिलने पर दलित परिवार जंगल से चूहे खरगोश आदि प्राकृतिक खाद्य सामग्री प्राप्त की जाती थी। मुसहरों के परिवारों में खाने के लिए कुछ न मिलने पर विवाह के अवसर पर फेंके गए जूठे पत्तलों से बचे हुए भोजन को खाने का वर्णन दलितों की गरीबी का चित्रण प्रस्तुत करता है।

'मुर्दहिया' आत्मकथा की सबसे बडी विशेषता यह है कि लेखक ने प्रस्तुत आत्मकथा में अवैध स्त्री – पुरूष संबंधों का चित्रण काफी संयत तटस्थ रूप से किया है– लेखन ने लिखा है '' सोफी की बहु तथा दोनों बेटियाँ सौंदर्य के मामले में अपरम्पार संपन्न थी। किंतु भूख उन्हें भी लगती थी पर उसे मिटाने के लिए उनके पास कुछ भी नहीं होता था। धीरे धीरे मजबूरी में उनका सौंदर्य काम आने लगा गा मामले में अपरम्पार संपन्न थी। किंतु भूख उन्हें भी लगती थी पर उसे मिटाने के लिए उनके पास कुछ भी नहीं होता था। धीरे धीरे मजबूरी में उनका सौंदर्य काम आने लगा गाँव के कुछ अभद्र ब्राह्मण युवक संध्या के समय मुर्दहिया के उस मुहाने पर लागता था कि स्वयं भूतों की चौकीदारी करने लगे।उस नटनियों का सौंदर्य मुर्दहिया की उन्हों कंटीली झाडियों के पीछे प्रायःगुम होता रहा (" मुर्दहिया पृ 73) दलित बस्ती में भूत प्रेत बाधा होने पर झाड –फुंक हवा बताश ये तो हर रोज का काम हुआ करता था। ऐसे प्रसंग पर होने वाले शोषण का विवेचन लेखक ने प्रस्तुत किया है। लेखक ने दलित समाज में व्याप्त अंधविश्वासों का मनोवैज्ञानिक स्पष्टीकरण दिया है। लेखक ने अपनी बस्ती में मनेस्सर चाचा के अनुरोध पर ' रामायण' पढने का कम किया था।

'मुर्दहिया ' के गिद्ध तथा लोकजीवन' यह प्रस्तुत आत्मकथा का चतुर्थ उपशीर्षक है। लेखक 'बबुरा धनहुवा' नामक गांव में पाँचवी कक्षा की परीक्षा के लिए पैदल जाया करते थे। उन दिनों उन्हे अल्पभोजन पर संतोष मानना पडा था। अकाल के दौरान लेखक ने अपने चाचा के अनुरोध पर मृत गाय का चमडा निकलने के लिए जाना पडा था। लेखक यह अनुभव दिल दहलाने वाला है। मृत गाय का चमडा निकालते समय गिद्धों द्वारा होने वाले आक्रमण लेखक ने प्रकाश डाला है। लेखक का परिवार अंधविश्वास की खाई में आकंठ डूबा हुआ है। लेखक एक बार भैस की पीठ से गिर जाते है, तब उनके परिवारजन मानते हैं कि लेखक को भूतबाधा हुई है। लेखक ने मुर्दहिया के लोकजीवन के विविध पहलुओं को उठाया है। वहाँ के लोग कोई न कोई बहाना बनाकर स्थानीय देवी–देवताओं को सुअर की बलि चढाई जाती थी। जिसका उद्देश्य यह होता था कि, भविष्य में किसी तरह की अनहोनी को रोकना दलित बस्ती में नटनियों के परिवार द्वारा अलग– अलग करतब दिखाने का वर्णन काफी रोचक बना हैं।

प्रस्तुत आत्मकथा का पांचवाँ उपशीर्षक ' भूतनिया नागिन' है। लेखक गाँव में रहने वाले एक नट परिवार की ललती नामक लडकी को अंग्रेजी सीखाने जाते थे। उनका यह काम लेखक के परिवार जनों को अच्छा नहीं लगता था। घर के लोग उन्हे आवारा मानने लगे थे। लेखक ने मुर्दहिया के जंगल मे सांप मार दिया था। गांव के लोगों ने लेखक को बताया था कि, मृत सांप बदला लेता है। डर के मारे लेखक को भैंस के कमरे में सोने के लिए भेज दिया जाता है। तब डरे हुए लेखक अपनी जान बचाने के लिए जप–तप का सहारा लेता है। गाँव के चौधरी सोम्मर चाचा की बीमारी के ठीक करने के लिए गए अनुष्ठान का विस्तार से चित्रण आया है। इतना बडा अनुष्ठान करने पर भी चौधरी सोम्मर चाचा मर गए थे।

होली के अवसर दलितों में फैलाए गए अंधविश्वास के प्रति सजगता दिखाई देती है। होली के अवसर पर परंपरागत रूप से दलितों द्वारा ब्राह्मणों के घर बचा खूचा खाना न मांगना यह दलित अस्मिता को दर्शाता है। भारत – चीन युद्ध का वर्णन प्रस्तुत उपशीर्षक में आया है। लेखक द्वारा सवर्ण छात्र के साईकिल के हैंडिल को स्पर्श करने पर अपमान किया जाता है। जिससे लेखक के हदय को ठोस पहुंचती है।

प्रस्तुत आत्मकथा का छठा उपशीर्षक ' चले बुद्ध की राह ' है। लेखक राहुल सांकृत्यायन के जीवन तथा साहित्य से काफी प्रभावित हुए थे। इसी समय उनके मन में गौतम बुद्ध के प्रति आकर्षण निर्माण हुआ। वे अपनी सुध– बुध खोकर गौतम बुद्ध के विचारों में मग्न रहते थे। वे गौतम बुद्ध की तरह वैरागी जीवन का अभ्यास कर रहे थे।

लेखक जिस स्कूल मैं पढते थे। उस स्कूल के एक शिक्षक अपनी छात्रा पर को प्रेम पत्र थे। यह प्रेम पत्र देने का काम लेखक ने किया था। लेखक लाल बहादुर सिंह के साथ चिरया कोट में जाकर शराब पीते हैं। जब उनके घरवालों को इस बात का पता लग जाता है। तब वे उनकी जमकर धुलाई करते हैं। तब उन्होंने कसम खाई थी कि जीवन भर शराब नहीं पीऊंगा। दसवी कक्षा में प्रवेश पाने हेतु लेखक की हुई खींचातानी का वर्णन उनके शिक्षा प्रेम को दर्शाता है। चिंतामणी सिंह द्वारा लेखक की दसवी कक्षा की शिक्षा का आर्थिक बोज उठाने का चित्रण उत्साह वर्धक है। लेखक ने दसवी कक्षा में दिल लगाकर पढाई करने पर वे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। लेखक को दलित बस्ती में विवाह के अवसर परश्शास्त्रार्थ करते समय महत्वपूर्ण स्थान मिल गया था। जिसके के कारण वे दलित बस्ती में हिरो बन गए। लेखक ने दसवी कक्षा उत्तीर्ण करने पर अगली पढाई के लिए आजमगढ के डी. ए. वी कॉलेज में प्रवेश लिया। लेखक की शिक्षा की जिद प्रशंसनीय रही है।

प्रस्तुत आत्मकथा का अंतिम उपशीर्षकं आजमगढ में फाका कशी ' है। प्रस्तुत उपशीर्षक में लेखक ने अपनी महाविद्यालयीन शिक्षा की चर्चा की है। वहाँ दलित छात्रों के छात्रावास में प्रवेश संबंधी अडचनों पर भी लेखक ने प्रकाश डाला है। डी.ए. वी. कॉलेज में आर. एस. एस. द्वारा किया जाने वाला जातिवाद लेखक ने बेबाकी के साथ स्पष्ट किया है। वहाँ के जातिवादी परिवेश से उबकर उन्होंने वह कॉलेज ही छोड देने का

फैसला किया था। लेखक ने रेल द्वारा बिना टिकट यात्रा करके कई स्थलों की यात्रा की है।

लेखक ने छात्रावास प्रबंधन विवाद के कारण दलित छात्रों को पडने वाले उपवासों का चित्रण किया है। लेखक अपने मित्र के साथ नर्तकी का नाच – गाना देखने जाते है'। वहाँ पर एक व्यक्ति द्वारा दोनों को मार पडती है। देवराज सिंह लेखक का मित्र है जब उसे पता चलता है कि लेखक के पास स्कॉलरशिप के 162 रूपयों की धनराशि है। तब वह उन्हे बहला – फुसलाकर एक मैदान में ले जाता है और रामपुरी चाकू का धाक दिखाकर उसमें से 81 रूपये छीन ले जाता है।इसप्रकार आजमगढ निवास के दौरान लेखक के जीवन में चढाव–उतार के दिन आए थे।

निष्कर्ष

'मुर्दहिया' दलित आत्मकथा में चित्रित दलित विमर्श का अध्ययन करने के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं। वे इसप्रकार है। 'मुर्दहिया' डॉ. तुलसीराम द्वारा लिखित दलित आत्मकथा है। मुर्दहिया तुलसीराम का पैतृक जन्मग्राम है। उनकी यात्रा मुर्दहिया से दिल्ली तक रही हैं। तुलसीराम का जन्म एक अतिसामान्य दलित परिवार में हुआ। पिता के आग्रहपर उन्होंने अपनी पढाई जारी रखी। तुलसीदास एक आँख से विकलांग रहे। अतएव एक ओर दलित तो दूसरी ओर विकलांगता ऐसा दोहरा शोषण तुलसीदास का हुआ हैं। लेखक का परिवार अनपढ है। वह अंधविश्वासी रहा। भूत–प्रेत, जादू–टोणा पर विश्वास रखना तो उनकी आम बात है। लेखक पर उनकी दादी के व्यक्तित्व का काफी प्रभाव रहा। लेखक के छुआछूत एवं जातीयता के कारण बार–बार अपमानित होना पडा। लेखक बचपन से जिद्दी नजर आता है, इसी कारण वे विविध बाधा, अवरोधों का सामना करते हुए शिक्षा प्राप्त करते रहे। दलितों का जीवन कितना दर्दभरा, और कारूणिक होता है। यह बात लेखक ने करीब से देखी थी। प्रस्तुत आत्मकथा में लेखक ने मुर्दहिया के स्त्री पुरूषों के अवैध संबधों का चित्रण संयत रूप से किया है। मुर्दहिया के लोग अनपढ है इसी कारण अंधविश्वास की खाई रूपी अंधकार में वे डूबे रहते हैं। तुलसीराम जैसे छात्र इसी से पढने लगे तब। उनके समाज में स्वाभिमान, अस्मिता आ गई। दलित जागरण के कारण दलित बांधवों में अपने हक, कर्तव्य और अधिकारों के प्रति सजगता आई। डॉ. आंबेडकर के विचारों पर वे चलने लगे। लेखक पर बौध्द धर्म के विचार और दर्शन का भी प्रभाव दिखाई देता है।

संदर्भ – मुर्दहिया – डॉ. तुलसीराम
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
प्रथम संस्करण सन् 2010 ई.